(४) **कविता**

रामकृष्ण मौलिक प्रश्न संग्रह (वागीश्वरी क्रमांक २)

१) भारतीय नारी

२) प्रेम भावना

३) स्पष्ट वक्ता

४) राजकारणी

५) निवडी

६) स्वाभिमानी

७) सहकारी जी प्रवृत्ती

८) पाश्चात्यांकित विशुद्ध प्रेम

९) स्वभाव वैशिष्ट्य

१०) प्रकाश वृष्टि

११) वैभवाची

BARR. ... LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY
एम. फिल.

-: भारतीय नारी :-

(१) ललिताने रघुनाथको प्रेम किया। उसकी सेवा मान्य की। उसे अपना परमेश्वरमी रघुनाथमें प्रेम करनेकी हिम्मत नहीं है। वह समझता है कि वह इस पात्र नहीं है। पर ललिता भारतीय स्त्री है। उसने ऐसे ही प्रेम किया और उसकी पत्नी मान बैठी। चाहे फिर वह परिस्थितीसे गरीब भी क्यों न हो? क्योंकि स्त्री चाहती है कि पति,हृदय और आत्माने सभी चाहिये।

"हृदय और आत्माने सभी - जीवनसे सभी - और फिर यदि दरिद्री हो तो मेरे लिये क्या?" - १

रघुनाथ ललिताको छोडना चाहता है। उसके प्रेमसे दूर जाना चाहता है। पर ललिता अब उसे छोड नहीं पायेगी क्योंकि उसने सेवाका वरदान सिर्फ पती-सेवाका वरदान रघुनाथ के लिये आजन्म लिया है। वह उसे पती मानती है। आज उस सेवा करनी-करानाही भारतीय नारीका कर्तव्य वह मानती है।

"वरदान देनेके लिये - मेरे देव।" - २

रघुनाथ ललिताका देवता है।

(२) प्रेमभावना :-

रघुनाथ तथा ललिताकी भेट हो जाती है। ललिता रघुनाथकी ओर आकर्षित होती है। और प्रेमभावनाका निर्माण होता है। ललिताका रघुनाथकी ओर प्रथम दर्शनीय प्रेम है। वह उसे अपना देवतामी मान बैठती है। वह उसकी सेवा तथा आदरसत्कार करना चाहती है। ललिता नारी है। नारी भावनासे वह भी दूर नहीं रह सकती। वह रघुनाथके प्रेममें पड जाती है।

"बडे भाग्यसे आज आप मेरे अतिथि है। अतिथि देवो का स्वागत होता है।" १

"आपकी सेवा का अधिकार आज देवं।" २

१) रा.का.मंदिर पृ.९३ ललिता
२) वही पृ.९४ ललिता

ललिता रघुनाथकी ओर खींची ही जा रही है। हालांकि रघुनाथ उससे दूर भागना चाहता है। ललिताने उसे अपना उपास्य देवताभी माना है।

" आप स्वच्छ देवता है - अगर आप मुझे अवसर देंगे तो - - ३

वह रघुनाथके प्रेमपाशोंमें फंसी जा रही है। वह प्रेमको विश्वास मानती हूं। जीवनका संगीत उसने प्रेममें देखा है। रघुनाथ विश्वास तो देता है पर ललिताने उसी प्रेमभावनाके कारण जीवनमें आनंद पाया है।

" यही तो आत्माका स्वर्ग है। विश्वास ही, विभूति है - जीवनका संगीत है। " - - ४

(3) स्पष्टवक्ता :-

रघुनाथसे ललिताकी भेट होती है। रघुनाथसे किसी किताब बारेमें स्पष्ट रूपसे वार्तालाप होता है। ललिताने स्पष्ट रूपसे रघुनाथसे पूछा है कि उनका क्या परिचय है? रघुनाथ असलीयत बतानेसे इनकार कर देता है। और रघुनाथको ठीक तरह पहचाना है इसके बारेमें धन्यवाद देता है। ललिता स्पष्टवक्ता है। पुरुषोंसे मापा रखती नहीं चाहती। इसलिये स्पष्ट कहती है। कि धन्यवाद की गठरी का बोझ मुझे मत दें।

आगे चलकर रघुनाथ अधिक बातें ललितासे करता है तब ललिता के विचार से स्पष्ट है कि रघुनाथ अपरिचित स्वच्छ है कि एक व्यक्तिसे बोल रहा है। वह भी इतना लगाव रखकर, यह बात ललिताको खटकती है। वह साफ रूपसे द्वेष प्रकट करती है।

" कमसे कम आपको यह तो सोचना चाहिये, आप अपरिचित मनुष्य से बाते कर रहे हैं। " - - १

" राह चलते चलते धन्यवादकी गठरी - मुझे बोझ ढोनेकी आदत नहीं है। "

रा.ना.संगीत पृ.९७ ललिता
वही पृ.९७.९८ ललिता
वही पृ.७३ ललिता

(४) भावुकतावादी :-

ललिता रघुनाथकी भूखी स्वरकी बात नहीं सेहनेलिये कहती है। उसका कहना है कि रघुनाथ कवि है उसके व्यवहारिक काम क्या लेना चाहिये। न कि किसीकी बात लेकर छुछुन्द-सी चोटी ऊपर उठानेके लिये रघुनाथ को सलाह देती है। जीवनको सुंदर बनानेकी सलाह देती है। जीवनमें हिंसात्मक नहीं बल्कि अहिंसा का संदेश देती है।

" नहीं जिंदगीको बनाकर उसे महान और सुंदर बनाकर उन प्रवृत्तियोंके चक्करमें पड़नेसे लाभ - १

(५) जिद्दी :- जिद्दी

ललिता रघुनाथकी जिताब पाती है।   तो आश्चर्य होता है कि, रघुनाथ यहाँ कैसे पहुँच पाया? अम्बरी ललिताको रघुनाथसे मिलनेको प्रतिबंध करती है। क्योंकि रघुनाथने उससे बेवफाई की है। और अम्बरीने भी उसका ख्याल छोड़ दिया है। पर ललिताको उसका अधिक ज्ञान नहीं है। फिरभी वह चाहती है कि भलेहि अम्बरी उससे न मिले। पर ललिता तो जरूर मिलेगीही।

" लेकिन मैं तो मिलना चाहती हूँ। - - - " १

(६) स्वाभिमानी :-

ललिता रघुनाथको बाप-सी मानकर ही प्रतिसेवा करना चाहती है। पर जब रघुनाथ उसे अम्बरीके अपमानीत करनेकी बात सिखाता है। तथा उस चाहना से दूर रहती है। उसको अपमानित करना उसे पसंद नहीं है। क्योंकि वह प्रेमकी भिक्षा लेना पसंद नहीं करती। उसका "अहं" अधीक जागृत रहा है। और रघुनाथको क्षमा करती है।

"आप क्या समझते हैं मैं आपका-चरण पकडकर रोने लगूंगी। प्रेमकी भिक्षा नहीं मांगी जाती महाशय। जिन्दगी बेहुदा खेलते ही खेलते मर जाता है। १

राखका मंदिर पृ.८२ ललिता
राखका मंदिर पृ.८४ ललिता
रा.का.मंदिर पृ.१४२ ललिता

(७) समझदारीकी प्रवृत्ती :-

अनवरीके प्रति ललिताके मनमें काफी सहानुभूति है। पश्चातापसे पवित्रता आ जाती है। अनवरीने यह स्पष्ट किया है। अनवरी पश्चातापकी जली जा रही है। ललिताका मतपरिवर्तन हुआ है। तथा वह अनवरीके बारेमें सहानुभूती पैदा कर देती है। और अनवरीके दुःखमें साथीदार बननेका प्रयास करती है। आखिर उसका हृदय नारी हृदय है। जो दूसरे नारीका दुःख देखकर विचलित होता है।

" अगर मुझसे आपकी कोई सहायता हो सके " - - १

रघुनाथसे ललिता समझौता करनेका तथा अपने जीवनका नया रास्ता बनानेका सुझाव देनेके लिये कहती है। वह रघुनाथको क्षमा मांगकर देवदासोंको मुक्त कर देती है। ताकी दोनोंके मार्गमें भी कोईभी रुकावटें न बने।

"हम दोनों एक दूसरेको भूल कर जिंदगीका नया रास्ता निकाल ले।" २

इसी कारण तुम जीवनमें सफल बन सकोगे ऐसा उपदेश भी ललिता करती है।

" स्त्रीका जीवन सफल है। उसकी इच्छा संसारमें कामनाका काम कर सकती है। " - - ३

(८) वासनारहित विशुद्ध प्रेम :- (

ललिताने रघुनाथको बडे सम्मानसे जीवनमें स्वीकार किया है। और उसका विचार है कि वह रघुनाथ को बडेही प्रेम - आदरपूर्वक मानेगी। वह प्रेम शरीरी नहीं रहेगा। अब वह सब कुछ मिलना शारिरीक प्रेम तथा वासनाएँ भूल जायेगी। और नारीत्व एवं पत्नीत्वकी भावनाएँ जगा देता था।

१) रा.का.मंदिर पृ.८२ ललिता
२) रा.का.मंदिर पृ.१४८ ललिता

वह उसको इसके आगेकी उसकी चोरकी (?) कायम रखनेके लिये कहती है और मित्रत्वके नाते को जोडती है और दूसरा रखनेकी कामना करती है। अब वह रमाकी ओर कामुक वासनाकी तरह नहीं देखेगी। मैं सहानुभूति और सम्मानके साथ याद रखूंगी।" — — 1

आप मुझसे मिलियेगा मित्र की तरह, हृदयको कडा करके साधनाके साथ" — — — 2

जीवनभर देवोगे कहा जाते हैं कि तुम्हारे मित्रकी तरह साथ रहेंगे।

जी हाँ हमलोग जीवन भर मित्र रहेंगे। हम तुम्हें एवं तुम्हारे साथ देंगे।" — — — 3

यह प्रेम परिवर्तन अमरीका अलग व्यक्तित्व बताता है।

(९) स्वभाववैचित्र्य :-

ललिता उदार मतवाली है तो कहींपर वह मानवतावादीकी [illegible] साथ रमाको देती है। ललिताने अमरीका साथ दिया है पर जब उसको समझता है अमरी मुसलमान है, कालिकाकी पूजा करती है। असली-आरतीभी करती है। देवताओंका पूजा करती है। और स्त्रियोंकेही मकानमें रहती है। ललिता धार्मिकताका कट्टरतासे पालन करती है। तो एक जगहपर मानवतावादी दृष्टीका विचार व्यक्त करती है। एक जगहपर वह सब लोग समान नहीं है। या उसके स्थान समान नहीं है। या उसके स्थान समान नहीं है। [illegible] करती है।

ललिता का यह स्वभाव वैचित्र्यही है। वह एक बातको एक बार मान्य करती है तो दूसरी ओर उसीको अमान्य। अर्थात वह सच्ची "मानवता वादी" 1
है या असमानकी दृष्टि" 2
रखनेवाली है यह हम समझ नहीं पाते।

(१०) असमानदृष्टि :-

ललिता अमरीके साथ पर्यटन करती है। साथ में दो [illegible] है। वे जब [illegible] जाती हैं तब पानी पीनेके लिये इकट्ठा बैठती हैं। यह बात

२. का. मंदिर पृ.५५ व ८२ ललिता

अम्बरीको डाटती है। क्योंकि वह चाहती है कि, बालियोंको हाथों,हाथसे हाथसे नही देना चाहिये अम्बरीका कहना है कि वह समाज है पर ललिताकी दृष्टि संकुचित है।

" हो सकता है, पर सभी जगह बराबर नही। दुनियामें सबकी अपनी अपनी जगह है।"

(११) दैववादी :-

ललिता अम्बरीसे स्पष्ट कहती है कि अगर अम्बरीका कोई घर नही है तो उसे दुख नही करना चाहिए क्योंकि जिसके जो भाग्यमें होता है, वैसाही फल उसे मिलता है। जैसा भोग रहेगा वह भोगना ही चाहिये। ललिता भाग्यपर नियतिपर विश्वास करनेवाली है।

" जो भाग्यमें हो " —

१) रा.का.मंदिर पृ.५५ ललिता

२.का.मंदिर पृ.५८ ललिता

(१) -: पुरवणी :-

राजाराम मंदिर (प्रथम संकलन) वारी पान क्र.३

१) भारतीय वारी

२) [illegible]

३) [illegible]

(५) दुर्गावती :-

(१) भारतीय नारी :-

मुनीश्वर दुर्गावतीसे विवाहित हुआ है; पर वह अब उसके साथ जीवन बिताना नहीं चाहता। दुर्गावती परित्यक्ता है। मुनीश्वरका कहना है कि, दुर्गावतीके पास पुत्र है। जीनेका सहारा भी अब उसे ईश्वरने दिया है। मुनीश्वरने उसे छोड़ दिया तो क्या हुआ? वह पुत्रके सहारे जी सकती है। फिरभी दुर्गावती मानती नहीं क्योंकि वह भारतीय संस्कृतीमें पली है। पती ही परमेश्वर उसने माना है। इसीलिये वह मुनीश्वरको देवता मानती है। वह मुनीश्वरको देवता मानती है। वह पतीकी दासी बनकर रहना चाहती है। उसकेही चरणोंमें सेवा करना चाहती है। वह एकनिष्ठ पतिव्रता है। चाहे मुनीश्वर उसे ठुकरा दे। वह पतीके पास रहेगी। मरेगी भी वहीं। क्योंकि भारतीय नारीकी श्रद्धा है कि पतीके चरणोंमेंही स्वर्ग है।

"आप मेरे देवता है। जो आपकी इच्छा। घर और वनमें आप रखे या न रखे - लेकिन अपने हृदयमें स्थान देनेमें तो आपको विश्वास है - जिसकी आशासे आप मेरा विश्वास भी स्वीकार रखने दीजिए। मैं क्या करूँ? कैसे रहूँ? कभी कभी अब भी चाहे चाहोंको चरणोंतक - - - । - - - ?

मुनीश्वर अपने पुत्रको नजदीक लेता है। दुर्गावतीसे छोटेके लिये पूछता है। दुर्गावती प्रेमकी प्यासी है। अपने पतीका प्रेम पानेके लिये वह तरस गई है। पर प्यारके मेहकी बूंदसे उसके निराशाभरे जीवनमें आनंद निर्झर बिखर और वह कहती है।

"बस मुझे अब कुछ नहीं चाहिये - मेरा पगली बस जीता रहेगा"। - २

इतनेही अब मुनीश्वर अन्न-अजमरीके पास चलेजाते। पर पत्नीप्रेम उसने पाया।

दुर्गावती भारतीय नारी है। इसी कारण वह पतीको उससे अलग नहीं मानती। अपना सर्वस्व उसे अर्पण कर देती है। उसका जो कुछ है वह पतीको अर्पण करती है।

१.रा.का.मंदिर पृ.४२ दुर्गावती

२.रा.का.मंदिर पृ.४४ दुर्गावती

" मैं तुमसे अलग नहीं हूं।
मेरा जो कुछ है – तुम्हारा है।।

(२) मानसिक द्वंद्व :-

सुवर्णवती माता और पत्नी दोनों है। पर पत्नीपद वह पा नहीं सकी। मुनीश्वरने उसे अपने कौटुंबिक वातावरणमें अकेले रखनेके लिये कहा था, पर सुवर्णवतीको वह असह्य था। अब मुनीश्वर कहता है कि, उसे अपना किया परिणाम भुगतना पडेगा। अब वह माताकी बनी रहे। अपने जीवनमें तभी रहे। और मुनीश्वरको स्वतंत्र कर दे। जीवनसे समझौता कर ले। पर यह कैसे हो सकता है ? पत्नीके जीवनकी पूर्णता तो मातृत्व मिलनेमें है। पर पतीको खोकर वह अभागिनी नहीं बन सकती। इसलिये मातृपदके अलावा वह मुनीश्वरसे भी कहती है कि उसका पत्नीपद उसे फिरसे मिलना चाहिये।

।। लेकिन मेरा पत्नी का पद ।

(३) सहिष्णुता :-

सुवर्णवती मुनीश्वरकी पत्नी है। मुनीश्वरकी पतिसेवा करती है। उसे मनसे चाहती है। अपने पतीको लौटानेके लिये कहती है। वह दुःखी है। पतिके लिये सब कुछ सहन करनेके लिये तैयार है। पर मुनीश्वर पीछे लौट नहीं पाता। सुवर्णवतीके मालूम है कि, वह अप्सरीके प्रेममें फँसा है। वह यह सहन भी नहीं कर पाती। फिरभी चुप हो जाती है। उसे तकरार है कि मुनीश्वर उसका पती नहीं रहा। मुनीश्वर स्पष्ट कर देता है कि, अब वह उसका नहीं रहा फिरभी देवमंडसे मुनीश्वरके हाथ नहीं बांधा उसका उसे दुःख है। और इसी कारण वह स्पष्ट करती है कि अब वह उसके साथ जायेगी, रहेगी।

रा.का.मंदिर पृ.४३ सुवर्णवती
रा.का.मंदिर पृ.४१ सुवर्णवती
रा.का.मंदिर पृ.४१ सुवर्णवती

दुर्गावतीके दुलीश्वरका विवाह होकरभी वह अभाग्यवान है। इसे वह उद्विग्न हो गयी है।

" मैं - यह जानती हूँ कि, आप मेरे जनके अपने नहीं रहे ? आपने मेरा हाथ नहीं पकडा। उस दिन उस रातको - उस मंडप में देव मंत्रोंके बीच " ४- १

" आप यहाँ रहे - मुझे जाना " २

१) रा.ना.मंदिर पृ.४१ दुर्गावती

२) रा.ना.मंदिर पृ.४१ दुर्गावती

मुक्तीका रहस्य

(प्रथम संस्करण)

(6) आशा देवी

1. स्त्रीसुलभ भावना
2. मानवता वादी
3. भारतीय पतिव्रतानारी
4. सत्प्रवृत्ती
5. दैववादीवृत्ती
6. स्पष्टवक्तापृवृत्ती
7. दृढ निश्चयी
8. मनका औदार्य
9. तत्वज्ञानी
10. वर्चस्वकी प्रवृत्ती
11. मनकी जलन
12. मानसिक कुंठा
13. मानसिक भ्रमावस्था
14. पश्चाताप दग्धता
15. बुद्धिविभ्रमावस्था
16. स्वप्नवृत्ती
17. त्यागीवृत्ती
18. भावनारहित विशुद्ध प्रेम
19. स्वभाव वैचित्र्य
20. आस्तिकवादीवृत्ती
21. मरणप्रवृत्ती

1) स्त्रीसुलभ भावना :-

आशादेवी, पढीलिखी है। वह बेझिझक सबोंसे बाते करती है। शमीजीसे वह निःसंकोच बाते भी करती है। आधुनिक अभ्यास संध्याको सहरे ज्यादा प्रेम किया है। वह कुमारकरके साथही रहती है। पर उसका लडका मनोहर उसे प्रेम करती है। जो मातृभावना का है। और वह स्त्री होनेके बावजूदभी मनोहरसे प्रश्न करती है। कि मुझे माँ कहो, मैं तुम्हारी माँ हूँ।

मनोहर ये बात मानने हरगीज तैयार नहीं है कि आशा

उसकी माँ है। क्योंकि वह मनोहरको गाय का दूध पिलाती है। अपना नहीं। इतना होनेपरभी आशा माँ बनना चाहती है। मातृहृदय प्रेमकी स्त्री सुलभ करना इसमें दिखाती है। और अपनी अंतस्थ इच्छा पूर्ण करनेकी चेष्टा करती है।

आशा देवी अपने आपको बच्चे होनेकी अपेक्षा करती है तथा अपने बुढापेका भविष्य भी स्पष्ट करती है। मनोहरके बार बार वह माँ कहनेका आरोप करती है। अगर मुझे वह माँ नहीं कहता है, तो वह मरण भी चाहती है।

स्त्री की सबसे महत्वपूर्ण आशा तथा पूर्णता माता बनने में ही है। नारीकी पूर्णता इसीसे साबीत होती है। वह मनोहरको बच्चा मानती है तथा स्वयंको उसकी माता। वह कहती है भी है कि, वह उसका लड़का बना रहे तथा आशादेवी उसकी बड़ी माँ। और मनोहरको विश्वास लेती है कि वह उसे माँ कहकर पुकारेगा।

आशादेवी का यह कथन की,

"मनोहर आज से तुम मुझे मा कहो। मेरे ब लड़के नहीं होंगे। मैं मर जाऊँगी तब तुमने मुझे वहाँ पहुँचा देना। तुम्हारी माँ ने मुझसे कहा था कि, मैं तुम्हारी माँ बनूँ। तुम्हे माँ की जरूरत है। और मुझे बच्चेकी। तुम मुझे माँ कहो। मैं तुम्हे बच्चा कहूँ। कहोगे ना ?

आशादेवीका यह कथन उसकी माँ बननेकी तीव्र इच्छा स्पष्ट करता है। हर नारीकी यही इच्छा होती है। आशादेवीका यह वर्णन अनैसर्गिक न होकर नैसर्गिक ही लगता है।

आशादेवी तथा उमाशंकर में वार्तालाप चलता है। आशादेवी सबकुछ छोड़कर जानेके लिये तैयार है। उमाशंकर उसे रहनेके लिये आग्रह करते हैं। उसकी सेवाका अहेसास व्यक्त करते हैं। तथा उसको पैसे भी देनेका वादा करते हैं। बातबातमें आशादेवी मनोहरकी पूछताछ करती

है कि वह कहाँ है ? वही मनोहर जिसके लिये वह माँ बनना चाहती है। उसे वह देखभी नहीं सकी इसका उसे बुरा लगता है। मनमें बुरा लगता है की

"जाते समय को देख भी न सकी "
आशादेवीकी स्त्रीसुलभ भावना शांत नहिं रह सकती। आखीर वह नारी है। एक माता।

डॉक्टर तथा आशादेवीमें अब मानसिक एकातानता निर्माण हुई है। और अब आशादेवी डॉक्टरसे प्रेमभी करने लगती है। उसने मान्य किया है कि डॉक्टरही उसके लिये पहला पुरुष है। इससे पहले वह - डॉक्टरसे घृणा करती थी। पर अब वह चाहती है कि, अब अंतीम पुरुष डॉक्टर रहे। वह उससे प्रेम भी करती है।

उसी तरह हमारा जीवनभी एक हो जाय। उस समय मैं - तुमको घृणा करती थी। आज मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ। तुम मेरे लिये पहले पुरुष हो। यह सच है। अब तुम मेरे लिये अंतिम पुरुष भी रहो। मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ। तुम मेरे प्रियतम हो।

आशादेवी डॉक्टरसे विवाह करना चाहती है। दोनो विवाह बध्द होना चाहते है। नारी जीवनमें अकेला रहना नहीं चाहती। स्त्री विवाहबध्द हो, यह उसके लिये नैसर्गिक भावना है।

" हम लोग विवाह करेंगे - तुम भी अविवाहित हो और मैं भी ---

स्त्रीसुलभ भावनाके अनुसार यह वर्तन अति नैसर्गिक है। जो नारी सुलभ भावनासे विसंगत नहीं है।

2] <u>मानवता वादी</u> :

आशादेवी मौतसे अब बच गई है। डॉक्टरसे वार्तालाप चलता है। डॉक्टरको अपने कियेपर पूर्ण पश्चाताप है कि, जो कुछ -

हुआ गलत हुआ । अब डॉक्टरभी पछताते हैं। और माफी मांगते है। अपने किये गयेबुरे कामोंके प्रति माफी मांगते है । जीवनमें किये बुरे कामोंकी क्षमा चाहता है । आशादेवीका कहना है कि वह स्वयं भी तो गलतियोंकी ही बनी है । अेक मानवमे दूसरे मानवको माफ करना आवश्यक है । तथा डॉक्टरको माफ करके वह मानवता वादी बनना चाहती है । अंत:करणकी उदात्तता बताती है ।

"मुझे अभी अधिकार नहीं की आपको माफ कर सकूं । मुझे भी मनुष्य बन लेने दीजिए ।"

डॉक्टरसे वह आगे कहती है कि, अगर उमाशंकर उसे क्षमा कर देते हैं तो आशादेवी फिरसे पवित्र होती है । वह उन्हे देवता मानती है । तथा उन्हें देवत्वदे देती है । यही उसकी मानवताका प्रतीक है ।

डॉक्टर साहब वे मेरे ईश्वर है । डॉक्टर उमाशंकरके सामने आना नहीं चाहते । तथा आशादेवी उन्हे जबरदस्तीसे उमाशंकरके सामने ले जाना चाहती है । वह चाहती है कि घडीभर उमाशंकरके सामने जाने डर लगेगा, लज्जा आयेगी पर गलती करनेके बाद पश्चातापसे ही मुक्ती मिल पायी है । उसके बीर मानस मानव नहीं बनेगा । आशादेवी - उमाशंकरको मानव बनाना चाहती ।

इस पाप को धोकर सिर ऊँचा क्यों नहीं कर लेते ? घडी भरकी तकलीफ और फिर मुक्ती - कितनी सुंदर चीज उसके लिये यह कमजोरी ?

३] भारतीय पतिव्रतानारी :

आशादेवे सोचती है कि शायद उसे उमाशंकरका साथ मिले । जिसे वह पति मानती थी । उमाशंकरको अपना पती मानकर पैरोंपे अपना सीर रख देती । जब कभी उमाशंकरका पैर उसके मुँहपर पडजाता तो वह

उसे अपना भागयही समझती है । वरदान मिलगया ऐसा भी मानती । भारतीय नारी अपने पती को ही परमेश्वर मानती है । उसकी सेवा में ही अपना सुख मानती है । उसके पैरोंमें ही स्वर्ग मानतीहै । आशा देवी ने उमाशंकरको अपने मनमें पतीका स्थान भी दे दिया है ।

तुम्हारे पैरोंसे अपना सिर रखा देती थी । जब कभी तुम्हारा पैर मेरे मुखपर पड जाता था समझती थी वरदान मिला । पूजा सफल हो गई ।

आशादेवी की सफल पत्नी बननेकी यह चेष्टा ही है ।

4) सत प्रवृत्ती

आशादेवीने हमम जहर ले लिया है । तथा वह मनोहरसे कहती है कि वह अब दुनिया छोडकर जा रही है । मनोहर की माँ की तरह मनोहरसे वह अंतमे बिदाई देती है । और मनोहरसे वह कहती है कि उसकी प्रगती होदेव तथा फले फूले वह अच्छा बने यह प्रार्थना करती है ।

"तुम यहा दुनियामें फूलो फलो ।
लोग तुम्हारी इज्जत करे ।

आशादेवी अंतीम समयपरभी वह औरोंकी भलाई ही चाहती है ।वह मनोहरके प्रति सद्भावनाही व्यक्त करती है । यह मानववृत्ती है ।

5) दैववादी वृत्ती

आशादेवी अब इस निष्कर्षपर तो आ गई है कि, इस जनममें तो वह उमाशंकरको पति नहीं मान सकती । पर इस जनममें ना सहीतो अगले जनममें वह उन्हें माँगेगी । उसका विश्वास पुनर्जनमपर है । इस जन्म में ना सही अगले जनममें वह उमाशंकरकी बीवी बनके जरूर बनेगी । यह भारतीय विश्वास है । क्यों की भारतीय नारी 7 जनम वही पति परमेश्वर से माँगती है । यही उसकी बडी आशा है । जिसपर वह वह जी रही है ।

"दूसरे जन्म में तुम्हें पाना है ।

6] स्पष्टवक्ता प्रवृत्ती

आशादेवी और डॉक्टर साहब है एक दूसरे से बातचीत करते रहते है । डॉक्टर आशादेवीसे मिलना चाहते हैं । पर आशादेवी - उनसे मिलना नहीं चाहती । और तबीयत खराब है ऐसा कारण स्पष्ट करती है । डॉक्टर यही कारण ले लेते है और आशासे मिलनेकी - जबरदस्ती करते है । आशादेवीके घरमें वे सीधे चले आते है । और वह उन्हे सीधे प्रश्न पूछती है की यह सीधे चले आनेकी पध्दती कौनसी है ? और वह सभ्यता का प्रश्न वह पूछती है और गुस्सेमें आकर पूछती है

" इस तरहकिसीके घरमें चले आने का क्या अधिकार है
साहब ? यह कहाँ की सभ्यता है ?

डॉक्टरसे दूर जानेकी तथा ध्वेषकी प्रवृत्ती आशादेवी स्पष्टरूपसे और डरते हुये जाहिर कर देती है । तथा विरोध दर्शन करती है ।

7] दृढनिश्चयी :

आशादेवी तथा डॉक्टरके वार्तालापसे जाहिर है की आशा देवीने जहर दिया है । और मनोहरकी माँ इसी कारण मर चुकी है । डॉक्टरकोइसी बातका फायदा लेना है की वह जबर दस्तीसे क्यों" मा ही वह आशादेवीके मान्य करने लगाया है कि वह मनोहरके माँ की हत्यारी है. डॉक्टर आशा देवीका इस बातका पुख्ता साबितकरणा चाहता है की उसने उलेपत्र लिखा है की 8 ग्रे जहर दिया गया है । जो पत्र 20 मार्चका का है । इतना होनेपरभी आशादेवी कहती है की कोई बात नहीं । देखा जाएगा किसी भी हालतमें वे अपने चरित्रकी पवित्रता छोडनेपर राजी नहीं है।

मतलब इतने कठिन परिस्थितीमेंभी आशादेवी अपने आपकी दृढनिश्चयी वृत्तीनहीं छोड पायी । और वह जानकरभी की डॉक्टरके पास उसका अपने हाथो लिखा हुआ झेवह पत्र है । परिस्थितीके सामने आशादेवी पराभूत नहीं होती । यह उसकी दृढनिश्चयी वृत्ती काही सु चुक है । और वह अपने चरित्रकोही कायम रखना चाहती है ।

8) मनका औदार्य :

आशादेवी तथा उमाशंकर बाते करते है । तथा मनोहरकी माँ है की हत्याकैसे हुई इसकी चर्चा करते है । उमाशंकर कितनी बडी गलत धारणामें है कि, मनोहरकी माँ तपेदिक की बीमारीसे मर गई । यह बात आशाके चुभती है । मनमें कष्ट देती है । और इसी कारण वह अपनी गलती उमाशंकरके सामने मान्य करती है । यह क्षमा याचना की वृत्ती उसकी है । बडे अंत:करणसे वह अपनी गलती का स्वीकार करती है । क्योंकी वह मनुष्य होना चाहती है । "मैंने उसे जेहर दिया था"

9) तत्वज्ञानी :

मनोहरसे सिनेमा जानेकी जिद आशादेवी करती है । वह उसकी माँ नहीं बन सकती, दूध नहीं पिला सकती । मनोहरका प्रश्न है कि, मेरी माँ लौटकर कब आयेगी ? क्या वह फिर वापिस नहीं आयेगी ? तब तब आशाका कथन तत्वात्मक रूप लगाता है उसका विश्वास है की ---

" जो जाता है फिर नहीं आता । वह भगवानके दरबारमें गई है । वहाँ कोई मरता नहीं । किसीको कोई डर नहीं होता। वह वह सुख दु:खके परे ठिकाना है । कितना बडा तत्वज्ञान ? कितने छोटे बालकके सामने आशादेवी कह जाती है । वह यह मानती नहीं कि मनोहरकी माँ दु:खमें है । बल्की उसका विश्वास है की जीवनमें आत्मा अमर है । वह मरती नहीं । यह सुख दुखके परे रहती

जाती है । भगवानके दरबारमें किसीको दुःख नहीं होता वहाँ सुखही सुख है ।

आशादेवीका यह अपना तत्वज्ञान है,जो परिस्थीतीके व्दारा बन गया है । आशादेवीने जीवनमें जो अनुभव लिये है उसका यह परिणाम है ।

आशादेवीने जहर ले लिया है । तथा वह अब इस दुनियामें रहना नहीं चाहती । वह वहाँ जाना चाहती है जहाँ कोई नहीं है । जहाँ सिर्फ शुन्यावस्था है । सुख ही सुख तथा चैन ही चैन रहेगी । जहा दुखोंका संबंध नहीं है ।

"दुनियाके उसपार जहाँ कोई नहीं"

दुनियासे वह बाज आ गई है । और जीवनमें अब पूरी निराशा आ गई है । वह अब जीवनका सत्य तत्व समझ चुकि गई है ।

१०) वर्चस्वकी प्रकृती :

आशा उमाशंकरको सब कुछ साफ साफ बताना चाहती है । इतना ही नहीं तो वह उमाशंकरको देवताभी मानती है । किसी कारण वह उससे अच्छे प्रकृतीका गैरफायदा भी लेना नहीं चाहती । और उमाशंकरको अपने पास बैठनेकी इच्छा प्रदर्शित करती है । उमाशंकर जब इसकेलिये मानते नहीं तब वह जबरदस्ती उनकी इच्छा न रहने के बावजूदभी बिठाती है । क्यों की आशादेवीकी प्रकृती वर्चस्वसे भरी प्रकृती है ।

इसी तरह वही यहाँ इस जगह इस कुर्सी पर बैठो । मैं जो कह रही हूँ वह वैसी बात नहीं है । जिसे तुम उठे उठे संभाल सको । बैठो मेरे देवता आज मै तुम्हारी दुनिया उतार दूंगी ।

आशादेवी जबरदस्ती क्यों नहीं उमाशंकरपर वर्चस्व प्राप्त करती है ।

।1। मनकी जलन :

उमाशंकरके सामने आशादेवीने स्वीकार किया है कि उसने मनोहरकी माँ को जहर दिया है । उमाशंकरने पूछा कि इसका कारण क्या है ? तब आशाका कहना है कि वह उनसे प्रेम करती थी तथा दोनोंके प्रेममें कोई अन्य हिस्सेदार हो यह वह सहन नहीं कर सकती थी । क्यों की आशादेवी उमाशंकरके प्रेम स्पर्श तथा सहवासके लिये तरसती थी ।

स्त्री यह चाहती है कि जिससे वह प्रेम करती है । उसे कोई और न चाहे । अगर अन्य कोई बीचमें आता है तो वह उसे खत्मभी कर सकती है । आशादेवीका वर्तन भी इसी प्रकारका है कि अगर कोई बीचमें आये तो उनसे वह न जाने क्या करेगी ?

" हाँ मैं चाहती थी —— मेरे प्रेममें कोई हिस्सेदार नहीं । जिस समय मैं तुम्हारे प्रेम तथा स्पर्शके लिये तरसती थी । ?

।2। मानसीक घुटन

आशादेवी पहलेसेही उमाशंकरसे प्रेम करती है । उन्की मनोहरकी पत्नीकोभी जहर दे दिया है । ताकि वह उमाशंकरका प्रेम पा सके । पर वास्तवमें परिस्थिती विरुध्द है । वह मन ही मन घुटती है की रातरातभर वह करवटे बदलती हैं । वह बार बार सोचती है कि शायद उमाशंकर आ गये । हरबार उसे भ्रम होता कि वे आ गये । विचारोंसे उसका मन कांपने लगता । रोंगटे खड़े हो जाते पर क्या उपयोग ? मनही मनमें इन सारी बातोंका अनुभव उसे होता था । ना वो इन बातोंको जाहिर कर सकती थी ।

" तुम सो जाते थे --- और मैं रात रात इस करवट से उस करवट सोचती।की अब आप आते हो ——

बिल्लीकी आवाजभी तुम्हारे पैरोंकी आवाज मालूम
होती थी ----- मेरा हृदय कांपने लगता ------ ?

(3) मानसिक भ्रमावस्था :-

आशादेवीने मनोहरके माँकी हत्या जहर देकर की है। इसका डर तथा परिणाम उसके मनपर है। उमाशंकर उसके लिये संपत्ती तथा घर छोडनेके लिये तैयार है। पर आशादेवी अब वहाँ नहीं रहना चाहती। आशादेवीको वे अध्यापिका बनाना चाहते है। पर वह बनना नहीं चाहती। परिस्थितीका सामना नहीं कर पायी। उसके मनमें भ्रमावस्था है कि मनोहरकी माँ उसकेइस कृत्यसे सुखी नहींहै। वह मनोहरकी माँ को भ्रमावस्थामें ही अपने साथ सायेकी तरह पाती है।

" देखिए देखिए। आप को देख नहीं पडती "

यह भ्रमावस्था होनेका एकही कारण है की आशादेवीने की हुई हत्या उसे चैन नहीं लेने देती। अचेतन मनमें यह बात हमेशा उसे चुभती है।

आशादेवी मरणमार्गपर है। तथा वह अब दुनियाको छोडकर जाना चाहती है। फिरभी अंतमें उसे भ्रम होता है कि मनोहरकी माँ उसे दिखती है। और वह चाहती है की शायद यह मनोहरकी माँ ही तो नहीं।

" तुम्हारी माँ वह देखो
नहीं देखते ------

(4) पश्चाताप दग्धता :

डाक्टर आशादेवीको धमकी देता है कि, पुलिसमें वह रिपोर्ट करवा देगा। शर्मा जी से भी कहेगा। और यह सब जानकारी वाले

वह इसके लिये ही बताता है की आशादेवी उसे चाहती नहीं। उससे दूर रहती है। इसकारण डॉक्टरको एक पडी है और आशादेवी पश्चाताप से मरी जा रही है। वह अपने कियेपर पछता रही है। वह कहती है की वह अपनेपर काबू नही रख पाई। अमानुषताका दर्शन करने लगी। उसके पास ऐकही हेतु था की मनोहरकी माँ की हत्या। वह कहती है

> "मै स्वयं पश्चातापसे मरी जा रही हूँ। कुछ समय मेरे मस्तिष्कमे हत्याकी भावना नाच रही थी। कुछ समय मैं मनुष्य योनिसे उतरकर पिशाच्ययोनिमें चली गई थी। मैने क्या कहा था भूल जाईये ---- "

आशादेवी अपने कियेपर पछताती है। पुनः फिरसे मानव बनना चाहती है। अब वह खुदको जान गई है। पश्चाताप की भावना ही मानवको पवित्र बनाती है। आशादेवी पश्चाताप करने के बाद पवित्र बननेकी आशा रखती है।

आशादेवी मौतका सहारा लेना चाहती है। और आठ बूंद जहर डॉक्टर को देनेके लिये कहती है। डॉक्टर [illegible] लोभी है तथा उससे प्रेमभरी लोभकी अपेक्षा करते है। आशादेवी डॉक्टरको कहती है कि अब उन्होंने आना नहीं। तब डॉक्टर उसे फिरसे जालमें पकडते है या कहते है कि फिर तो वे शर्माजिसे जहरकी बात जरूर कहेंगे। आशा कुछ कह नहीं पाती कि क्या करे? उसे पश्चाताप होता है की अगर वह यह हत्या न करती तो शर्माजीका डर उसे क्यों होता? शर्माजीसे विश्वासघात होता इस बातसे वह डरती थी। कि वे क्या सोचेंगे?

आशाका कथन है की .

> उनसे कहने? कहियेगा मत डॉक्टर साहब। कितना बडा विश्वासघात होगा? वे क्या कहेंगे?

आशादेवी अपने कुकृत्योंपर पछताते में आकरअब उसका पश्चाताप करवा ले रही है । मनही मनमे जलि रही है । डॉक्टर किस स्वभाव के है यह आशादेवी उमाशंकरको बताना चाहती है। पर उमाशंकर उसपर विश्वास नहीं करते कि डॉक्टर कुस्वभावी है । आशा जानती है की डॉक्टरने कौनसा पाप किया है । वह कितना बुरा है । वह मनही मन पश्चाताप करती है कि काश डॉक्टरका पाप वह उन्हे बता सकती । डॉक्टरकी कोई बुराईका प्रमाण उमाशंकरके पास नही है पर आशादेवी अंतर्मुखी बनकर हृदयकी जलन तथा पाप आत्मामें छुपा नहीं सकती । वह पश्चाताप करती है कि उसका मुँह बंद रखना पड रहा है ।

" मेरे हृदयकी मेरी आत्माने मुँह बंद किया ? "

आशादेवी मौतके द्वारपर है । और वह मनोहरको छोडकर चली जा रही है । वह अब जिंदा नहीं रह सकती । देवताके समान उमाशंकर को वह पति मानती है । और इसी समयपर डॉक्टर ने किया पाप याद आकर वह पश्चाताप में पड जाती है । अपने मृत्युकी खबर उन्हे वह देना नहीं चाहती । तथा अपने किये करतूतोंसे अब वह छुटकारा चाहती है ।

"नही अभी मुझे कुछ नही हुआ है -- उन्हे न बुलाना - मेरे अनंत जीवनके आराध्य देव --- उन्हें नही --- उन्हे नहीं ---- "

(5) बुध्दिग्लानावस्था :

आशादेवीका चरित्र भ्रष्ट किया है अपने मनकी इच्छा पूर्ण की है । और आशादेवीपर दाग लगाया है कि वह उसके लिये पहला पुरुष है । आशादेवी इस बातसे लज्जित है कि आखिर इस राक्षसने उसका बदला चरित्र हननसे ले लिया । जो उसका अमूल्य रत्न था भ्रष्ट कर दिया। वह इस पापकी जिम्मेदारी डॉक्टरपर डालती है । क्योंकी परमेश्वरही इस बातकी साक्षी है ।

आशादेवी का कथन है कि,

" मेरे सब कुछ बिगाड कर मेरे पास जो अमूल्य रत्न था उसे छीन कर तुम पर भी "----------१

डाक्टर कहते है की आशाने मुझे बचालिया । पर आशाका खुदका ही कथन तो है की

" मैं तो डूब गई । -------

उमाशंकर आशादेवीसे तबियत के बारेमे पूछते हैं " आशा आशादेवीकी तैयारी कहाकी चल रही है । पूछते है । आशाअब परिस्थीतिमें इस कदर अटकगई है कि, वह अब उमाशंकर के पासभी रहना नहीं चाहती । उस जगहसे वह तंग आ गई है । उस वातावरणसे वह कहीं दूर जाना चाहती है ।

"अब तो यहां क्षणभरही जी नहीं चाहता ---

(6) स्वप्नवृत्ती :

मनोहर आशादेवीसे माँ के पास ले चलनेकी जिद पकडता है । माँ से मिलनेकी इच्छा करता है । माँ की मुलाकातके लिये वह कुछभी करनेको तैयार है । और आशादेवीका कहना तक माननेका तैयार है । और उसके बुढापेमें उसकी सेवाभी करनेका वचन देता है। आशा देवी अपने भविष्यका विचार करती है तथा दृष्टीके सामने स्वप्न देखती है । और मनोहरसे कहती है की मै बूढी होनेके बाद मेरी सेवा करना । जब वह बीमार पडे तब सेवा करना ।

आशादेवी मातृसुलभ भावनासे भरी है । वह मनोहरको अपना लडका मानती है । हर माँकी यही इच्छा होती है की उसका लडका बेटा राजा बने, विवाहित हो । बच्चोंका बाप बने ।

आशादेवीका कथन है की " अभी नहीं " । अभी बहुत तुम बडे होगे । पढोगे, साहब बनोगे, तुम्हारा विवाह होगा । बच्चे होंगे ।

इसी समय आशादेवीभी अपनी अतृप्त इच्छा मन:चक्षु के सामने बक लाकर खडी करती है। वह चाहती है कि, मेरा भी जीवन बदलेगा। इसके बाद एक ऐसे स्वप्न वह देखती है। सपने देखना, रचाना मानवी स्वभाव है। आशादेवी इससे परे नही। आखीर वह मानव है। और इसीकारण वह सोचेती है। और इसे भी महत्वकी बात यह है कि आशादेवी एक नारी है। नारीमन स्त्रीसुलभ भावनासे भरा है जो सपने रचाती भी है।

मेरा विवाह होगा। लडके होंगे। जब वह सब बडे हो जायेंगे उनकाभी विवाह होगा। मेरा बाल सफेद हो जायेंगा। मैं बुढी हो जाऊंगी। तब मैं बीमार पडूंगी। और मर जाऊंगी। तब मेरे लडके मुझे उठा कर --- वहां- - पहुंचा देंगे जहां तुम्हारी मां --- गई है ----- ?

आशादेवी स्त्री होनेके कारण विवाह, घर, बच्चे, बुढापा, मरना, बच्चोंने मदद करना इन सब घरेलु बातोंमे झुलती है। स्त्री एक घर तथा कुटुंबसे जादा और कुछ नही अपेक्षा करती। आशादेवीभी अपनी अतृप्त वासनाओंकी पूर्ती स्वप्न वृत्ती को सामने रखकर करती है। मनोहरके जैसे लडकोंको जन्म देतेही मातृवासना उसके मनमें है। जो नारीसुलभ भावना है स्वप्नवृत्तीसे अलग वह नहीं है।

(7) त्यागी वृत्ती :-

उमाशंकरके मामा उसे अपना घरबार छोडनेके लिये कहते है। उमाशंकर आशादेवीके इसकी संकटमें दिये हुए प्रेम तथा सहानुभुतिको चाहता है। फिरभी वह आशादेवीको छोडना नहीं चाहता ? आशा देवीको इस बातका पता चलता है कि, उसके लिये उमाशंकर घरबार छोड रहे है। आशादेवी का कहना है कि, उन्होंने घर नहीं छोडना चाहिये। वह तो उनकी सेवाके लिये आई थी। और मददका समयभी खत्म हुआ है। वह यह नहीं चाहती कि अपने सुखके लिये किसीने सारी

संपत्तीभी छोड दे । यह भी चाहती नहीं वह खुदही त्याग करना चाहती है । खुदकेलिये औरोंको वह कष्ट नहीं देना चाहती ?

मैने सब सुना है । मेरे लिये आप इससे अलग न हो ।----
आशादेवी अपनेलिये औरोंको कष्ट देना अब नहीं चाहती । वह सच्ची सेवक है । मददकरना वह चाहती है स्वार्थ नहीं।

(8) भावनारहित विशुद्ध प्रेम

तुकारामकरने आशादेवीको कभी स्पर्शतक नही किया है । न कोई शारिरीक भूक की तृप्ती दे उसे प्रेमसे जागृत करते है । हालाकी लोग समझते है कि डा उमाशंकर और आशादेवीका गहरा संबंध है । पर वास्तविक सचतो अलग है कि आजतक तो उन्होने उसकी परछाई तक नही छुई । वह स्पर्शके लिये तरसती रही पर वह नही मिला और वह उमाशंकरसे अंतमे कहती है कि तुम देवता हो तुम्हे अकेले रहना है । क्यों कि धरोंमे बांधकर रहनेसे प्रेम भ्रष्ट हो जायेगा । इसी कारण वह उन्हे छुती नहीं ।

(9) स्वभाववैचित्य

आशादेवी उमाशंकरमे अटपट हो रही है । उमाशंकर डॉक्टरको मारना चाहता है बदला लेना चाहता है । डॉक्टरसे विश्वासघातका बदला । आशादेवी अपने खुनको मारनेका आदेश देती है । पर तुकांकर यह बात कर नहीं सकते । क्यों की वह उससे प्रेम करते है । आशादेवी इसीवक्त कहती है कि वह अब पवित्र नहीं रही । दुसरी अलग हो गई है । इसी हालपर वह उमाशंकर को उपासक देवता भी मानती है । जब की उनमे दुसरे= इससे पहले उमाशंकरका अपना पहला और आखरी पुरुष माना है ।

और डॉक्टरसेभी वह अपनी प्रेम भावना जाहिर करती है । उसी समय वह उमाशंकरसे आशीर्वाद भी मांगती है । और डॉक्टर तथा

उमाशंकर के विवाह की बात स्पष्ट करदेती है ।

20) आस्तिकवादी वृत्ती

आशादेवीने मनोहरको मांको जन्म दिया है यह बात - डॉक्टरको मालूम है । इस राज का डॉक्टर गैरफायदा लेना चाहता है । उसके चरित्रका अपहरण करना चाहते है । उसकी पवित्रता भ्रष्ट करना चाहते हैं । सिर्फ अेक भूलके कारण । डॉक्टर उसके चरित्र की पवित्रताका पोल खोलना चाहते है । और चरित्र आदि सब झूठी बाते वह बताता है । और आशादेवीको उसकी प्रतिष्ठा बचानेके लिये उपदेश देती है । डॉक्टर साहब उसकी हंसी उडाते है । अब तब आशादेवी संसारके चलानेवाले परमेश्वरका आस्तिकवाद शाबीत करती है । विश्वास व्यक्त करती है । ईश्वरसे बचकर कोई कही नहीं जा सकता अैसा उसका विश्वास है । वह कहती है,

> "संसारके अूपर भी कोई चीज है । ग उसे ईश्वर कहते हैं । डॉक्टर साहब उसकी नजरसे बचकर कोई कहाँ जायेगा ? -----

वह परमेश्वरके न्यायको समझी है की उसके घर देर है मगर अंधेर नहीं है । वह न्याय जरूर देगा । मनुष्यके सब रास्ते जब बंद होते है तो वह परमेश्वरके दरवाजे पर जाता है । वहां गिडगिडाता है। दयाकी भीख मांगता है । अेक विश्वास रखता है । सत्यका रास्ता निभानेकी आशा रखता है । आशादेवीभी अीश्वर मानती है । आशादेवी जहर खाकरही अब जगको छोड रही है । तथा जगसे उसका कोई संबंध नहीं है । उसका सिर्फ शिवत्व पर विश्वास है ।

" हे शिव , हे शिव --------- ?

21) मरण प्रवृत्ती :

आशादेवी तथा डॉक्टर दोनों अेक दूसरे से बात करती है ।

डॉक्टरकी बातोंसे वह बोअर हो जाती है और कहती है कि मुझे अगर सताएगी तो वह प्राण दे देगी दुनियासे वह छुट्टी पा जाये ।

"मेरा प्राण बहुत सस्ता है अगर इसे देकर मैं और चीजोंसे
छुट्टी पा जाऊँ तो -------- मेरी महाजन खुश रहे ----
मै रहूँ या न रहूँ --------

इस मरण प्रवृत्तीसे आशादेवी स्पष्ट करती है कि जब मानव बहुतकुछ जीवनमें निराश बन जाता है तब वह जीवनसे मुक्ती पानेके लिये मरण प्रवृत्तीका ही विचार करता है । आशादेवी की मरण प्रवृत्ती से महिमा होनेके कारण वह मरना भी चाहती है । डॉक्टर और आशादेवी दोनो बातचीत करते है । आशादेवी पश्चाताप से दूर जाकर पवित्र होना चाहती है । मानव सुलभ भावनामें आना चाहती है । डॉक्टर अपनी लोभी प्रवृत्ती उसके सामने रखता है । और आशादेवीका प्रेम पाना चाहता है । उसे प्रेमके बदलेमें बदनाम भी नहीं करना चाहता । पर आशादेवी है कि वह चाहती है कि उसके 8 बूंदे मोहनकी माँ को पिलायी तो 8 बूंदे अब डॉक्टरको मे उसे देना चाहिये वह मरना चाहती है । अपने आपका बोझ संभाल नहीं पाती । उसस से छुट्टी लेना चाहती है । जिंदगीकी हकीकत वह समझ गई है तथा वह अब जीना नहीं चाहती । मरना चाहती है ।

आशादेवी कहती है ..

"वह वही आठ बूंद आप मुझे भी पिला दे । मैं
अब अपने आपको सम्हाल नहीं सकती । मेरा बोझ
बराबर बढ़ता चला जा रहा है । उससे छुट्टी लेनी
होगी " ----------

वह जीवनसे छुटकारा पानी चाहती है, ताकि कुछ चैन मिले ।